अध्याय-7
शब्द रूपान्तरण

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया विकारी शब्द कहलाते हैं। प्रयोग के अनुसार इनमें परिवर्तन होता रहता है। विकार उत्पन्न करने वाले कारक तत्त्व जिनसे शब्द के रूप में परिवर्तन होता है, वे इस प्रकार हैं–

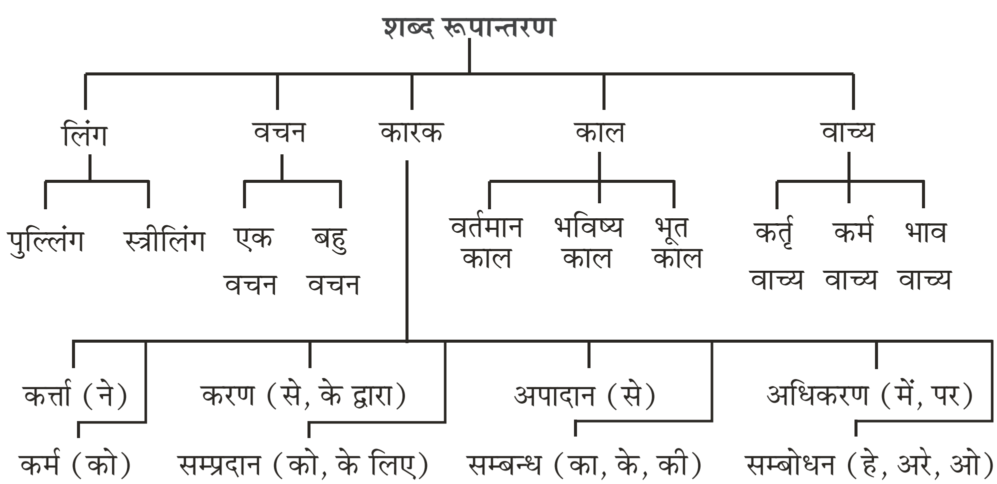

लिंग

लिंग शब्द का अर्थ होता है चिह्न या पहचान। व्याकरण के अन्तर्गत लिंग उसे कहते हैं जिसके द्वारा किसी विकारी शब्द के स्त्री या पुरुष जाति का होने का बोध होता है।

हिन्दी भाषा में लिंग दो प्रकार के होते हैं–

(i) पुल्लिंग–जिससे विकारी शब्द की पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं। जैसे– मेरा, काला, जाता, भाई, रमेश, अध्यापक आदि।

(ii) स्त्रीलिंग–जिससे विकारी शब्द के स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे– मेरी, काली, जाती, बहिन, विमला, अध्यापिका आदि।

लिंग की पहचान के नियम–लिंग की पहचान शब्दों के व्यवहार से होती है। कुछ शब्द सदा पुल्लिंग रहते हैं तो कुछ सदैव स्त्रीलिंग ही रहते हैं। जैसे–

(i) दिनों एवं महीनों के नाम पुल्लिंग होते हैं, जैसे–सोमवार, चैत्र, अगस्त आदि।

(ii) पर्वतों एवं पेड़ों के नाम पुल्लिंग होते हैं, जैसे–हिमालय, अरावली, बबूल, नीम, आम आदि।

(iii) अनाजों एवं कुछ द्रव्य पदार्थों के नाम पुल्लिंग होते हैं, जैसे–चावल, गेहूँ, तेल, घी, दूध आदि।

(iv) ग्रहों एवं रत्नों के नाम पुल्लिंग होते हैं, जैसे–सूर्य, चन्द्र, पन्ना, हीरा, मोती आदि।

(v) अंगों के नाम, देवताओं के नाम पुल्लिंग होते हैं, जैसे–कान, हाथ, सिर, इन्द्र वरुण, पैर आदि।

(vi) कुछ धातुओं के एवं समय सूचक नाम पुल्लिंग होते हैं, जैसे–सोना, लोहा, ताँबा, क्षण, घण्टा आदि।

(vii) भाषाओं एवं लिपियों का नाम स्त्रीलिंग होता है, जैसे–हिन्दी, उर्दू, जापानी, देवनागरी, अरबी, गुरुमुखी, पंजाबी आदि।

(viii) नदियों एवं तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे–गंगा, यमुना, प्रथमा, पञ्चमी आदि।

(ix) लताओं के नाम स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे–मालती, अमरबेल आदि।

लिंग परिवर्तन–पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के कतिपय नियम इस प्रकार हैं–

(i) शब्दान्त 'अ' को 'आ' में बदलकर–

छात्र–छात्रा	पूज्य–पूज्या	सुत–सुता
वृद्ध–वृद्धा	भवदीय–भवदीया	अनुज–अनुजा

(ii) शब्दान्त 'अ' को 'ई' में बदलकर–

देव–देवी	पुत्र–पुत्री	गोप–गोपी
ब्राह्मण–ब्राह्मणी	मेंढ़क–मेंढ़की	दास–दासी

(iii) शब्दान्त 'आ' को 'ई' में बदलकर–

नाना–नानी	लड़का–लड़की	घोड़ा–घोड़ी
बेटा–बेटी	रस्सा–रस्सी	चाचा–चाची

(iv) शब्दान्त 'आ' को 'इया' में बदलकर–

बूढ़ा–बुढ़िया	चूहा–चुहिया	कुत्ता–कुतिया
डिब्बा–डिबिया	बेटा–बिटिया	लोटा–लुटिया

(v) शब्दान्त प्रत्यय 'अक' को 'इका' में बदलकर–

बालक–बालिका	लेखक–लेखिका	नायक–नायिका
पाठक–पाठिका	गायक–गायिका	

(vi) 'आनी' प्रत्यय लगाकर–

देवर–देवरानी	चौधरी–चौधरानी	सेठ–सेठानी
भव–भवानी	जेठ–जेठानी	

(vii) 'नी' प्रत्यय लगाकर–

शेर–शेरनी	मोर–मोरनी	जाट–जाटनी
सिंह–सिंहनी	ऊँट–ऊँटनी	भील–भीलनी

(viii) शब्दान्त में 'ई' के स्थान पर 'इनी' लगाकर–

हाथी–हथिनी	तपस्वी–तपस्विनी	स्वामी–स्वामिनी

(ix) 'इन' प्रत्यय लगाकर–

माली–मालिन	चमार–चमारिन	धोबी–धोबिन
नाई–नाइन	कुम्हार–कुम्हारिन	सुनार–सुनारिन

(x) 'आइन' प्रत्यय लगाकर–

चौधरी–चौधराइन	ठाकुर–ठकुराइन	मुंशी–मुंशियाइन

(xi) शब्दान्त 'बान' के स्थान पर 'वती' लगाकर–

गुणवान–गुणवती	पुत्रवान–पुत्रवती	भगवान–भगवती
बलवान–बलवती	भाग्यवान–भाग्यवती	सत्यवान–सत्यवती

(xi) शब्दान्त 'मान' के स्थान पर 'मती' लगाकर–

श्रीमान्–श्रीमती	बुद्धिमान–बुद्धिमती	आयुष्मान–आयुष्मती

(xiii) शब्दान्त 'ता' के स्थान पर 'त्री' लगाकर–

कर्त्ता–कर्त्री	नेता–नेत्री	दाता–दात्री

(xiv) शब्द के पूर्व में 'मादा' शब्द लगाकर–

खरगोश–मादा खरगोश	भालू–मादा भालू	भेड़िया–मादा भेड़िया

(xv) भिन्न रूप वाले कतिपय शब्द–

कवि–कवयित्री	वर–वधू	विद्वान–विदुषी
वीर–वीरांगना	मर्द–औरत	साधु–साध्वी
दूल्हा–दुलहिन	नर–नारी	बैल–गाय
राजा–रानी	पुरुष–स्त्री	भाई–भाभी
बादशाह–बेगम	युवक–युवती	ससुर–सास

वचन

व्याकरण में वचन का अर्थ है संख्या। जिससे किसी विकारी शब्द की संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। वचन दो प्रकार के होते हैं–

(i) एकवचन–जिस शब्द में किसी व्यक्ति या वस्तु की संख्या एक होने का पता चले उसे एकवचन कहते हैं, जैसे–लड़का खेल रहा है। खिलौना टूट गया है। यह मेरी पुस्तक है।

इन वाक्यों में आए लड़का, खिलौना तथा पुस्तक शब्द एकवचन है।

(ii) बहुवचन–जिस शब्द से किसी व्यक्ति या वस्तु की संख्या एक से अधिक होने का पता चले, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे–लड़के खेल रहे हैं। खिलौने टूट गए। ये पुस्तकें मेरी हैं।

इन वाक्यों में आए लड़के, खिलौने एवं पुस्तकें शब्द बहुवचन हैं।

बहुवचन बनाने के नियम–

(i) शब्दांत 'आ' को 'ए' में बदलकर–

कमरा–कमरे	लड़का–लड़के	बस्ता–बस्ते
बेटा–बेटे	पपीता–पपीते	रसगुल्ला–रसगुल्ले

(ii) शब्दान्त 'अ' को 'ए' में बदलकर–

पुस्तक–पुस्तकें	दाल–दालें	राह–राहें
दीवार–दीवारें	सड़क–सड़कें	कलम–कलमें

(iii) शब्दांत में आये 'आ' के साथ 'एँ' जोड़कर–

बाला–बालाएँ	कविता–कविताएँ	कथा–कथाएँ

(iv) 'ई' वाले शब्दों के अन्त में 'इयाँ' लगाकर–

दवाई–दवाइयाँ	लड़की–लड़कियाँ	साड़ी–साड़ियाँ
नदी–नदियाँ	खिड़की–खिड़कियाँ	स्त्री–स्त्रियाँ

(v) स्त्रीलिंग शब्द के अन्त में आए 'या' को 'याँ' में बदलकर–

चिड़िया–चिड़ियाँ	डिबिया–डिबियाँ	गुड़िया–गुड़ियाँ

(vi) स्त्रीलिंग शब्द के अन्त में आए 'उ' 'ऊ' के साथ एँ लगाकर–

वधू–वधुएँ	वस्तु–वस्तुएँ	बहू–बहुएँ

(vii) 'इ' ई स्वरान्त वाले शब्दों के साथ 'यों' लगाकर तथा 'ई' की मात्रा को 'इ' में बदलकर–

जाति–जातियों	रोटी–रोटियों	अधिकारी–अधिकारियों
लाठी–लाठियों	नदी–नदियों	गाड़ी–गाड़ियों

(viii) एकवचन शब्द के साथ जन, गण, वर्ग, वृन्द, मण्डल, परिषद् आदि लगाकर।

गुरु–गुरूजन	युवा–युवावर्ग	भक्त–भक्तजन
खेती–खेतिहर	मंत्री–मन्त्रिमण्डल,	मंत्रि–परिषद

कारक

'कारक' का अर्थ होता है 'करने वाला', क्रिया का निष्पादक। जब किसी संज्ञा या सर्वनाम पद का सम्बन्ध वाक्य में प्रयुक्त अन्य पदों व क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे 'कारक' कहते हैं।

विभक्ति–'कारक' को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला चिन्ह विभक्ति कहलाता है। विभक्ति को परसर्ग भी कहते हैं।

भेद–हिन्दी में कारक के आठ भेद हैं–

(i) कर्त्ता कारक–क्रिया करने वाले को व्याकरण में 'कर्त्ता' कारक कहते हैं। कर्ता कारक का चिन्ह 'ने' होता है। यह संज्ञा अथवा सर्वनाम ही होता है तथा क्रिया से उसका सम्बन्ध होता है। विभक्ति का प्रयोग सकर्मक क्रिया के साथ ही होता है। वह भी भूतकाल में।

जैसे— राधा ने नृत्य किया। श्याम ने पत्र लिखा।

मीना ने गीत गाया। उसने पढ़ाई की होती तो पास हो जाता।

(ii) कर्म कारक–क्रिया का फल जिस शब्द पर पड़ता है उसे कर्म कारक कहते हैं। कर्म कारक का विभक्ति चिन्ह 'को' है। विभक्ति 'को' का प्रयोग केवल सजीव कर्म कारक के साथ ही होता है, निर्जीव के साथ नहीं। जैसे–

— राधा ने नौकर को बुलाया।

— वह पत्र लिखता है।

— स्वाति कॉलेज जा रही है।

— मीना ने गीता को पुस्तक दी।

— आज्ञासूचक शब्दों में निर्जीव के लिए भी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे–

पुस्तक को मत फाड़ो। कुर्सी को मत तोड़ो।

— स्वाभाविक क्रियाओं में जैसे–

उसको प्यास लगी है।

राम को बुखार हो रहा है।

(iii) करण कारक–करण का शब्दिक अर्थ है साधन। वाक्य में कर्ता जिस साधन या माध्यम से क्रिया करता है अथवा क्रिया के साधन को करण कारक कहते हैं। करण कारक की विभक्ति 'से' व 'के' द्वारा है। जैसे–

— मैं कलम से लिखता हूँ। मैंने गिलास से पानी पीया।

— सानिया बैट से खेलती है। मैंने दूरबीन से पहाड़ों को देखा।

करण कारक के अन्य प्रयोग इस प्रकार हैं–

क्रिया सम्पादित करने के क्रम में–

— प्रिया पेन्सिल से चित्र बनाती है।

के द्वारा / द्वारा

— मुझे दूरभाष द्वारा सूचना प्राप्त हुई।

— उसे डाकिए के द्वारा पत्र प्राप्त हुआ।

आज्ञाजनित वाक्य–

— ध्यान से अध्ययन करो।

— स्कूटर से नहीं साइकिल से स्कूल जाओ।

सीख–मेहनत से अच्छे अंक मिलते हैं।

रीति से–भिखारी क्रम से बैठे हैं।

गुण या स्थिति–राम हृदय से ही दयालु है।

वह स्वभाव से ही कंजूस है।

मूल्य–सेब किस भाव से दे रहे हो?

उत्पत्ति के क्रम में–सोना (धरती) खानों से मिलता है।

नदी पहाड़ से निकलती है।

दूरी बताने में–आगरा दिल्ली से दूर नहीं है।

तुलना करने में–मोहन सोहन से तेज भागता है।

कमी दिखाने के लिए–बुखार से बहुत कमजोर हो गया।

— वह अकल से (अन्धा / पैदल) है।

प्रार्थना / निवेदन–ईश्वर से सद्बुद्धि माँगें।

— अध्यापक से पूछकर कक्षा से बाहर जाओ।

(iv) सम्प्रदान कारक–सम्प्रदान (सम् + प्रदान) का शाब्दिक अर्थ है–देना। वाक्य में कर्ता जिसे देता है अथवा जिसके लिए क्रिया करता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। जब कर्ता स्वत्व हटाकर दूसरे के लिए दे देता है वहाँ सम्प्रदान कारक होता है।

सम्प्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए, को' है। 'के वास्ते, के निमित्त, के हेतु' भी कह सकते हैं। जहाँ क्रिया द्विकर्मी हो वहाँ विभक्ति 'को' का प्रयोग होता है। जैसे–

के लिए–

— सैनिकों ने देश की रक्षा के लिए बलिदान दिया।

— लोगों ने बाढ़ पीड़ितों के लिए दान दिया।

— मैरिट में आने के लिए मेहनत करो।

'को' — राजा ने गरीबों को कम्बल दिए।

— पुलिस ने चोर को दण्ड दिया।

(v) अपादान कारक–अपादान का अर्थ है–पृथक होना या अलग होना। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु का व्यक्ति का दूसरी वस्तु या व्यक्ति से अलग होने या तुलना करने का भाव हो वहाँ अपादान कारक होता है।

अपादान कारक की विभक्ति 'से' है।

पृथकता के अलावा अन्य अर्थों में भी अपादान कारक का प्रयोग होता है, जैसे–

पृथकता —पेड़ से पत्ता गिरा।

—मेरे हाथ से गेंद गिर गई।

—विजय शाला से घर आया।

क्रिया सम्पादन में—मजदूर गेंती से गड्ढा खोदता है।

—वह पेन्सिल से चित्र बनाता है।

पहचान के अर्थ—यह मारवाड़ से है।

दूरी—पोस्टऑफिस स्कूल से दूर है।

तुलना—विमला सीता से लम्बी है।

शिक्षा—शिष्य गुरु से शिक्षा ग्रहण करता है।

(vi) सम्बन्ध कारक–शब्द का वह रूप जो दूसरे संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से सम्बन्ध बतलाए, संबंध कारक कहलाता है।

सम्बन्ध कारक की विभक्ति का, के, की, रा, रे, री एवं ना, ने नी है। प्रकार इस प्रकार हैं–

जैसे —**स्वामित्व**—अजय की पुस्तक गुम हो गई।

—अपना पर्स सम्हाल कर रखो।

—मेरा चश्मा बहुत कीमती है।

रिश्ता —विजय अजय का भाई है।

—अमिताभ बच्चन कवि हरिवंशराय बच्चन के पुत्र हैं।

अवस्था —मेरी उम्र पचास वर्ष है।

—यह युवक तीस वर्ष का है।

कोटि/धातु–

—पाँच मिट्‌टी के घड़े लाओ।

—मैंने एक कांसे की कटोरी खरीदी है।

—मेरी साड़ी सिल्क की है।

प्रश्न —पाँचवीं कक्षा में कितने छात्र हैं?

—आपके कितनी सन्तानें हैं?

(vii) अधिकरण कारक–वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

अधिकरण कारक की विभक्ति है—में एवं पर। 'में' का अर्थ है अन्दर या भीतर तथा 'पर' का अर्थ है—ऊपर। जैसे–

'में' — इस मन्दिर में कई मूर्तियाँ हैं।

— उस कप में चाय है। मेरे पर्स में पैसे व ड्राइविंग लाइसेंस हैं।

— टायर में हवा कम है। बगीचे में छायादार पेड़ हैं।

कभी-कभी 'में' का प्रयोग बीच या मध्य के रूप में भी होता है। जैसे–

— राम और श्याम में गहरी दोस्ती है।

— भारत की संस्कृति विश्व में विशेष स्थान रखती है।

— पी.टी. उषा का नाम श्रेष्ठ धावकों में है।

पर — मेज पर पुस्तक रखी है।

— पेड़ पर चिड़िया बैठी है।

निश्चित समय बताने के लिए—

— परीक्षा समाप्ति की घण्टी तीन बजने पर लगेगी।

— प्रति आधे घण्टे पर चेतावनी घण्टी लगानी है।

महत्व बतलाने के लिए–

— कदम-कदम पर पुलिस का पहरा है।

— बहुत से सैनिक सीमा पर तैनात हैं। हमें अपनी जुबान पर अटल रहना चाहिए।

जल्दबाजी बतलाने के लिए–

— वह तो घोड़े पर सवार होकर आता है।

(viii) सम्बोधन–वाक्य में जब किसी संज्ञा या सर्वनाम को पुकारा जाए अथवा सम्बोधित किया जाए उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। सम्बोधन में पुकारने, बुलाने एवं सावधान करने का भाव होता है।

सम्बोधन कारक के विभक्ति चिन्ह हैं–हे, ओ, अरे।

हे-भगवान! कैसा जमाना आ गया है?

हे ईश्वर! मेरा पोता कहाँ गया?

अरे-अरे! ये क्या कर रहे हो?

अरे! गुरुजी, आप इधर कैसे?

अरे! बच्चो शोर मत करो।

ओ-ओ खिलौने वाले! बतलाना कैसे खिलौने लाये हो।

ओ भाई! कहाँ भागे जा रहे हो?

कर्म सम्प्रदान कारक में अन्तर–

(अ) कर्मकारक में 'को' का प्रभाव कर्म पर पड़ता है।
सम्प्रदान कारक में 'को' विभक्ति से कर्म को कुछ प्राप्त होता है।

(ब) कर्म कारक में 'को' विभक्ति का फल कर्म पर होता है पर सम्प्रदान कारक में 'को' विभक्ति कर्ता द्वारा देने का भाव होता है।

करण कारक व अपादान कारक मे अन्तर–

(अ) करण कारक में 'से' क्रिया का साधन है जबकि अपादान में 'से' अलग होने का भाव है।

(ब) करण कारक 'से' क्रिया का फल प्राप्त होता है जबकि अपादान कारक 'से' तुलना, दूरी, डरने या सीखने का भाव है।

संज्ञाओं की कारक रचना

(अ) संस्कृत से भिन्न अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा के वचन मे अंतिम 'आ' कार को 'ए' कार में परिवर्तित कर देते हैं।

जैसे–घोड़ा, घोड़े ने, घोड़े को, घोड़े से

(ब) संस्कृत में भिन्न शब्दों में विभक्ति का प्रयोग होने पर संज्ञाओं के बहुवचनात्मक रूपों के साथ 'ओ' या 'यो' प्रत्यय जोड़ते हैं।

जैसे–गधे-गधों ने, गधों को, गधों से। डाली–डालियों ने, डालियों को, डालियों से।

(स) सम्बोधन कारक के बहुवचन के लिये शब्दान्त में 'ओं' जोड़ते हैं।

जैसे–नर–नरों, लड़का–लड़कों।

काल

काल का अर्थ है 'समय'। क्रिया के जिस रूप से उसके होने का समय मालूम हो, उसे 'काल' कहते हैं। काल के इस रूप से क्रिया की पूर्णता, अपूर्णता के साथ ही सम्पन्न होने के समय का बोध होता है। काल के तीन भेद हैं–

काल

भूतकाल	वर्तमानकाल	भविष्यकाल

1. भूतकाल–भूतकाल का अर्थ है बीता हुआ समय। वाक्य में जिस क्रिया रूप से बीते समय का होना पाया जाता है वह भूतकाल कहलाता है। यह क्रिया व्यापार की समाप्ति बतलानेवाला रूप होता है। जैसे–

सामान्य	—	अविनाश ने गाना गाया। गाड़ी जा चुकी थी।
	—	कुसुम घर पहुँच गयी होगी।
सम्भाव्य	—	खाना नीता ने ही बनाया होगा।
उद्देश्य मूलक	—	तुमने पढ़ाई की होती तो उत्तीर्ण हो जाते।

2. वर्तमान काल–क्रिया का वह रूप जिससे कार्य का वर्तमान समय में होना पाया जाए, उसे वर्तमान काल कहते हैं। यह कार्य निरन्तर हो रहा है, की जानकारी देता है। जैसे–

सामान्य	—	प्रशान्त खेल रहा है।
	—	लता गीत गा रही है।
सम्भावना	—	मोहन परीक्षा दे रहा होगा।
आज्ञार्थ	—	तुम यह पाठ पढ़ो।
	—	अब मैं चलूँ?

3. भविष्यकाल–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि कार्य आने वाले समय में सम्पन्न होगा, उसे भविष्यकाल कहते हैं। जैसे—

सामान्य	—	कृष्णा लेख लिखेगी।
	—	अंकित पुस्तक पढ़ेगा।
	—	लड़के खेलेंगे।
	—	औरतें गीत गाएँगी।
सम्भाव्य	—	किसान खेत जोत रहा होगा।
	—	अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहा होगा।
आज्ञार्थ	—	आप भी खेलिये।
	—	तुम अब जाओ।

वाच्य

क्रिया का वह रूप वाच्य कहलाता है जिससे मालूम हो कि वाक्य में प्रधानता किसकी है–कर्त्ता की, कर्म की या भाव की। इससे क्रिया का उद्देश्य ज्ञात होता है। अंग्रेजी में वाच्य को 'Voice' कहते हैं। वाच्य तीन प्रकार के होते हैं—

वाच्य

कर्तृ वाच्य — कर्म वाच्य — भाव वाच्य

1. कर्तृ वाच्य–जब वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का सीधा और प्रधान सम्बन्ध कर्ता से होता है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। इसमें क्रिया के लिंग, वचन कर्त्ता के अनुसार प्रयुक्त होते हैं। अर्थात् क्रिया का प्रधान विषय कर्त्ता है और क्रिया का प्रयोग कर्ता के अनुसार होगा। जैसे–

— मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।

— विमला ने मेहँदी लगाई।

— तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना की।

2. कर्मवाच्य–जब क्रिया का सम्बन्ध वाक्य में प्रयुक्त कर्म से होता है, उसे कर्म वाच्य कहते हैं। अत: क्रिया के लिंग, वचन कर्ता के अनुसार न होकर कर्म के अनुसार होते हैं। कर्मवाच्य सदैव सकर्मक क्रिया का ही होता है क्योंकि इसमें कर्म की प्रधानता होती है। जैसे–

— सीता ने दूध पीया।

— सीता ने पत्र लिखा।

— मनोज ने मिठाई खाई।

— राम ने चाय पी।

इन वाक्यों में 'पीया' और 'लिखा' क्रिया का एकवचन, पुल्लिंग रूप दूध व पत्र अर्थात् कर्म के अनुसार आया है। इसी प्रकार 'खा' व 'पी' एकवचन पुल्लिंग क्रिया 'मिठाई व चाय' कर्म पर आधारित है।

3. भाववाच्य–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि कार्य का प्रमुख विषय भाव है, उसे भाववाच्य कहते हैं। यहाँ कर्ता या कर्म की नहीं क्रिया के अर्थ की प्रधानता होती है। इसमें अकर्मक क्रिया ही प्रयुक्त होती है। लिंग, वचन न कर्ता के अनुसार होते हैं न कर्म के अनुसार बल्कि सदैव एकवचन, पुल्लिंग एवं अन्य पुरुष मे होते हैं।

— मुझसे सवेरे उठा नहीं जाता।

— सीता से मिठाई नहीं खाई जाती।

— लड़कों द्वारा खो-खो खेला जाएगा। आदि।

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1. निम्नलिखित में पुल्लिंग शब्द है–

(अ) हिन्दी (ब) दही

(स) पूर्णिमा (द) चाँदी [ ]

प्र. 2. कौनसा शब्द स्त्रीलिंग नहीं है–

(अ) छात्रा (ब) पृथ्वी

(स) वधू (द) जीवन [ ]

प्र. 3. 'नर' का स्त्रीलिंग शब्द है–

(अ) नारी (ब) स्त्री

(स) औरत (द) लड़की [ ]

प्र. 4. वीर का स्त्रीलिंग शब्द है–

(अ) वीरान (ब) वीरांगना

(स) वीरता (द) साहसी [ ]

प्र. 5. 'युवती' का पुल्लिंग शब्द है–

(अ) लड़का (ब) आदमी

(स) युवक (द) मनुष्य [ ]

प्र. 6. 'दासी' का पुल्लिंग शब्द है–

(अ) सेवक (ब) नौकर

(स) मजदूर (द) दास [ ]

प्र. 7. 'कवि' का स्त्रीलिंग शब्द है–

(अ) कविता (ब) गायिका

(स) कवयित्री (द) काव्य [ ]

प्र. 8. हिन्दी में वचन के प्रकार हैं–

(अ) तीन (ब) दो

(स) चार (द) छः [ ]

प्र. 9. कौनसे वाक्य में बहुवचन सही प्रयुक्त हुआ है–

(अ) गाएँ घास खाती हैं। (ब) गाओं घास खाती हैं।

(स) गायों घास खाती हैं। (द) गाय घास खाती हैं। [ ]

प्र.10. 'पेड़ से पत्ता गिरता है।' वाक्य में पेड़ शब्द का कारक है–

(अ) कर्त्ता कारक (ब) करण कारक

(स) अपादान कारक (द) अधिकरण कारक [ ]

प्र.11. 'पंडितजी ने बड़े प्रेम से भोजन किया।' पंडितजी शब्द में कारक है–

(अ) करण कारक (ब) अपादान कारक

(स) अधिकरण कारक (द) कर्त्ता कारक [ ]

प्र.12. राजा ने गरीबों को कम्बल दिए। 'गरीबों को' में कारक है–

(अ) कर्म कारक (ब) सम्बन्ध कारक

(स) सम्प्रदानकारक (द) अधिकरण कारक [ ]

प्र.13. वह बल्ले से खेल रहा है। 'बल्ले से' में कारक है–

(अ) अधिकरण कारक (ब) कर्म कारक

(स) करण कारक (द) अपादान कारक [ ]

प्र.14. नाव नदी में डूब गई। कारक बतलाइये–

(अ) अधिकरण कारक (ब) कर्त्ता कारक

(स) सम्बन्ध कारक (द) करण कारक [ ]

प्र.15. लड़के ने पुस्तक पढ़ी। कारक बतलाइये–

(अ) करण कारक (ब) कर्त्ता कारक

(स) अपादान कारक (द) सम्बन्ध कारक [ ]

प्र.16. हिन्दी भाषा में काल के कितने भेद हैं–

(अ) दो (ब) चार

(स) तीन (द) पाँच [ ]

प्र.17. हिन्दी भाषा में वाच्य के कितने भेद हैं–

(अ) चार (ब) तीन

(स) दो (द) छः [ ]

प्र.18. 'काल' का तात्पर्य है?

(अ) कल (ब) मृत्यु

(स) अवधि (द) समय [ ]

प्र.19. 'वाच्य' से ज्ञात होता है–

(अ) क्रिया का उद्देश्य (ब) क्रिया का रूप

(स) क्रिया का काल (द) उपर्युक्त सभी [ ]

उत्तर–1. (ब) 2. (द) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स) 6. (ब) 7. (स) 8. (अ) 9. (अ) 10. (ब) 11. (द) 12. (स) 13. (ब) 14. (द) 15. (ब) 16. (स) 17. (द) 18. (द) 19. (अ)

प्र.20. लिंग से आप क्या समझते हैं?

प्र.21. हिन्दी में लिंग के कितने भेद हैं?

प्र.22. स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग में अन्तर सोदाहरण लिखिये।

प्र.23. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिये–

ऊँट, चूहा, विधुर, विद्वान, नेता, कर्त्ता, सम्राट, आयुष्मान, हमारा, साधु, पंडित, अभिनेता।

प्र.24. लिंग के प्रकार बतलाते हुए विस्तार से नियमों का उल्लेख कीजिये।

प्र.25. विद्यार्थी परीक्षा दे रहा है। रेखांकित शब्द का वचन बतलाइये।

प्र.26. निम्नलिखित के बहुवचन लिखिए–

भैंस, रास्ता, नदी, पुस्तक, पक्षी, रात, कविता।

प्र.27. वाक्यों को बहुवचन में बदलकर पुनः लिखिये–

(1) लड़का नदी में तैर रहा है।

(2) पेड़ से पत्ता गिर रहा है।

प्र.28. वचन किसे कहते हैं?

प्र.29. हिन्दी में कितने वचन हैं, नाम लिखिये।

प्र.30. एकवचन से बहुवचन मे बदलने के नियमों का उल्लेख कीजिये।

प्र.31. निम्नांकित शब्दों में से एकवचन, बहुवचन शब्द पृथक-पृथक कर छांटिये–

तारा, भेड़ें, चिड़िया, बन्दरों, फूलों, गुलाब, मकान, दीवार, नौकरों, बकरियाँ, मौसम, आया।

प्र.32. रेखांकित शब्दों के कारक बतलाइये–

(अ) मैं शहर से बाहर जा रहा हूँ।

(ब) वह तुम्हारा मित्र है।

(स) पक्षी वृक्ष पर घोंसला बनाते हैं।

(द) विजय बल्ले से खेल रहा है।

(य) फर्श पर झाड़ू लगा दो।

प्र.33. करण कारक एवं अपादान कारक में अन्तर लिखिये।

प्र.34. सम्प्रदान एवं सम्बन्ध कारक में अन्तर बतलाइये।

प्र.35. कारक किसे कहते हैं?

प्र.36. कारक के कितने प्रकार हैं? नाम, परिभाषा, उदाहरण सहित लिखिए।

प्र.37. भूतकाल के वाक्यों को भविष्य काल में बदलिये–

(अ) वह कल मेरे घर आया था।

(ब) उसने मुझे पुस्तक दी थी।

प्र.38. निम्नलिखित कर्तृवाच्य को कर्म वाच्य में बदलिये–

(अ) मैंने पत्र लिखा।

(ब) ममता खाना पका रही है।

प्र.39. निम्नलिखित भाववाच्य को कर्तृवाच्य में बदलिये–

(अ) उससे दौड़ा नहीं जाता।

(ब) उससे खाया जाता है।

प्र.40. हिन्दी भाषा में काल के प्रकारों के नाम एवं परिभाषा लिखिये।

प्र.41. हिन्दी भाषा में वाच्य कितने प्रकार के हैं परिभाषा लिखिये।

प्र.42. कर्म वाच्य एवं भाव वाच्य में क्या अन्तर है।

प्र.43. हिन्दी भाषा के काल विभाजन की उदाहरण सहित एक तालिका बनाइए।

प्र.44. हिन्दी भाषा के वाच्य के प्रकारों की उदाहरण सहित एक तालिका बनाइये।